CONCEPT OF RESOURCE

Resource अर्थात् Re + Source
(बार-बार) (साधन)

व्युत्पति विज्ञान (Etymology) की दृष्टि से संसाधन शब्द का अर्थ बार-बार प्रयोग में आने वाले साधनों से होता है लेकिन Encyclopedia of Social Science की दृष्टि से :—

"संसाधन मानवीय पर्यावरण में वे पहलू हैं जिनके द्वारा मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति में सुविधा होती है तथा सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति होती है।"

जिमरमैन के अनुसार :—

"संसाधन पर्यावरण की वे विशेषतायें हैं जो मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति में सक्षम मानी जाती है।"

("Features of the environment which are considered to be capable of serving man's needs. they are given utility by the capabilities and wants of man.")

मैकनाल के अनुसार :—

"प्राकृतिक संसाधन वे संसाधन हैं, जो प्रकृति द्वारा प्रदान किये जाते है तथा मानव के लिए उपयोगी होते है।"

"Natural resources may be defined as those resources which are provided by nature and which are useful to man."

Concept of resource :— अनेक अर्थशास्त्रियों, प्राकृतिक विज्ञानियों तथा भूगोलवेत्ताओं ने संसाधनों का अध्ययन किया है। जिमरमैन के अनुसार "संसाधन होते नहीं है, बनाये जाते हैं" पीच एंव जेन्स (1972) के अनुसार "संसाधन मनुष्य द्वारा रचित होते है" वे मानव द्वारा किये गए मूल्यांकन की अभिव्यक्ति है। संसाधन मूल्यांकनकर्ता के बाहर ही नहीं भीतर भी विद्यमान होते है। कोई भी वस्तु, पदार्थ या तत्व तब ही संसाधन कहलाता है जब उसमें मनुष्य की आवश्यकता पूर्ती तथा कार्य सिद्ध करने

या लाभ प्रदान करने की क्षमता निहित है। इस दृष्टि से स्वयं मानव भी एक संसाधन है बल्कि यह कहना उपयुक्त होगा कि समस्त संसाधनों में मानव सर्वोपरि है। मानव द्वारा उपयोग में लाये जाने वाले सभी तत्व - भूमि, मिट्टी, वनस्पति, जल, जन्तु खनिज आदि संसाधन कहलाते है।

Resource Concept के अंतर्गत विद्वानों ने निम्न Concept दिये है। —

1) Static Concept :— इस वर्ग के विद्वानों का मत है कि संसाधन स्थिर तथा निश्चित होते है। इसके परिणाम में वृद्धि नहीं की जा सकती

2) Dynamic Concept :— इस संकल्पना की मान्यता है कि "संसाधन होते नहीं, बनते है" प्रकृति के उपादान तब तक संसाधन नहीं बनते जब तक कि वे मानव की इच्छाओं तथा आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं करते। इन्हे संसाधन बनाने के लिए मानव को अपनी शारीरिक तथा बौद्धिक शक्तियों का प्रयोग करना पड़ता है। कोई भी प्राकृतिक वस्तु जब तक मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन नहीं बनती, तब तक वह उदासीन तत्व मात्र होती है।

(3) Functional Concept :— संसाधन एक कार्यात्मक संकल्पना है। संसाधन का प्रमुख लक्षण उसकी मानवीय आवश्यकताओं पूर्ति करने की क्षमता है अतः कोई भी प्राकृतिक तत्व मानवीय उपयोग के योग्य सक्रियात्मक (Functional) रूप में बनाता है। भूगर्भ में स्थित कोयला एवं पेट्रोलियम खनन करके ही दोहन योग्य बनता है तथा संसाधन कहलाता है, भूगर्भ में नहीं। इस प्रकार पृथ्वी तल पर विभिन्न नदियों में प्रवाहित जल भी कार्यात्मक रूप में ही उपयोगी बन पाता है। मनुष्य संसाधनों में कार्यात्मकता उत्पन्न करता है। प्राकृतिक वस्तुओं के उपलब्ध होने से मानव की कार्य क्षमता में वृद्धि हुई है जिससे उसने नदियों, खनिजों, जंगल तथा मृदा जीवीय संसाधनों में परिवर्तन किये है।

4) Resources exist side by side with Resistance & Natural stuff.

प्रकृति में संसाधनों उपलब्धता के साथ ही प्रतिरोध एवं तटस्थ तत्व भी रहते है। इन्हें पृथक कर पाना कठिन है।

प्रकृति द्वारा प्रदान किये गये प्रतिरोधक तत्वों को अनिकारक तत्व कहते हैं। इनमें बंजर भूमि, बाढ़, बीमारियाँ तथा भूकम्प एवं तुफान जैसी प्राकृतिक आपदायें प्रमुख है। इस प्रकार शिक्षा स्वास्थ्य, सामजिक भावनायें आदि मानवीय क्षेत्र के संसाधन एवं प्रतिरोधक है। इनकी अनुकूलता संसाधन है तथा प्रतिकूलता प्रतिरोध है। शिक्षा प्राप्त व्यक्ति महत्वपूर्ण संसाधन है जबकि अज्ञानता एक प्रतिरोधक तत्व है। कुछ तत्व दोनों ही स्थितियों में स्वतन्त्र रहते हैं, जिन्हें मूक तत्व या तरल्य तत्व कहते हैं। प्रविधिक ज्ञान में वृद्धि करके तरल्य एवं प्रतिरोधक तत्वों को संसाधन बनाया जा सकता है।

5) The standard of man's living is the result of the utilization of resources:- मनुष्य के रहन-सहन का स्तर संसाधनों के उपयोग का परिणाम है।-

मानव ने विभिन्न संसाधनों का उपयोग करके अपने जीवनस्तर में सुधार किया है। प्राचीन मानव जब प्रकृति में विद्यमान संसाधनों के दोहन से अनभिज्ञ था तो जंगली अवस्था में जीवन व्यतीत करता था था, लेकिन जैसे-जैसे संसाधनों का उपयोग प्रारंभ हुआ मानवीय जीवन का स्वरूप बदल गया।

6) Concept of resource Conservation:-

जिस प्रकार संसाधन होते नहीं बनते है उसी प्रकार संसाधनों का अविवेकीपूर्ण दोहन इनके ह्रास होने का कारण बनता है। संसाधनों के संरक्षण से अभिप्राय है उसका इस सीमा तक उपयोग किया जाय कि वो उसकी प्रकृति में दीर्घकाल तक उपलब्धता बनी रहे। इस प्रकार संसाधनों का विवेकपूर्ण दोहन ही उनका संरक्षण है अतः मानव जिसे संसाधन का निर्माता बनाया गया उसे प्रकृति में उपलब्ध संसाधनों के संरक्षण के लिए भी कठोर कदम उठाये जाने चाहिए।

Classification of resources:-

1. संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर वर्गीकरण :—

संसाधन के प्रकार — उदाहरण।

I अक्षयशील संसाधन (Inexhaustible) - सूर्य। प्रकाश, वायु, जल।

(i) अपरिवर्तनीय (Immutable) - जल।

(ii) दुरुपयोजनीय (Missusable) - जल।

II क्षयशील संसाधन (Exhoustible) - जिवाश्म ईंधन, खनिज

(i) परिरक्षणीय (Maintainable) - वन, वन्य जीवन, मिट्टी की उर्वरता।

a) पुनर्नवीकरणीय (Renewble) - पादप, जन्तु। मिट्टी की उर्वरता।

b) अनवीकरणीय (Non-renewable) - वन्य जीवन।

(ii) अपरिरक्षणीय (Non-Maintainable) - अधिकांश खनिज।

a) पुनः प्रयोज्य (Reusable) - मूल्यवान पत्थर, हीरे, जवाहरात।

b) पुनः अप्रयोजनीय (Non-reusable) - कोयला, पेट्रोल, गैस।

2) संसाधनों के वितरण एवं प्रयोग एवं बारम्बारता पर आधारित वर्गीकरण

(i) ~~सब~~ अप्रयुक्त संसाधन

(ii) अप्रयोजनीय संसाधन

(iii) निव या सम्भाव्य संसाधन

(iv) गुप्त संसाधन

3) संसाधनों का वर्तमान वर्गीकरण

(i) प्राकृतिक संसाधन :- ये संसाधन प्राकृतिक पर्यावरण में सरलता से मिलते है जैसे कि मिट्टियाँ जल वन, वन्य जीवन, खनिज आदि। प्रकृति ने ये संसाधन मानव को उपहार स्वरूप दिये है जिनके द्वारा मानव ने अपनी संस्कृति का विकास किया गया है।

(ii) सांस्कृतिक संसाधन :- मानव अपने प्राकृतिक पर्यावरण के संसाधनों का प्रयोग प्राविधि की सहायता से करता है तथा सांस्कृतिक पर्यावरण का निर्माण करता है। कृषि उद्योग, अवसंरचना के संसाधन है

(iii) मानवीय संसाधन :- मानव जो संसाधनों का निर्माण तथा उपयोग

करता है तथा संस्कृति का निर्माण करता है, स्वयं सबसे बड़ा संसाधन है। जिमरमैन के अनुसार मानवीय संसाधन सबसे अधिक गतिशील, शक्तिशाली तथा सबसे अधिक परिवर्तनशील है क्योंकि वे ही संसाधन निर्माण प्रक्रिया में अंतिम मूल्यों का निर्धारण करते है।

Man & Resources:- मानव संसाधनों के विकास में विशिष्ट भूमिका अदा करता है। वह स्वयं संसाधनों का निर्माता भी है, और उपभोक्ता भी है। संसाधन निर्माता के रूप में मानव अपने श्रम का योगदान देता है। वह श्रम को अधिक उत्पादक बनाने की खोज करता है तथा नयी कलाओं का अविष्कार करता है। प्रकृति तथा संस्कृति के सहयोग से वह संसाधनों का निर्माण करता है। मानव ही उदासीन तत्वों को संसाधन में बदलता है

मानव की संसाधन निर्माता की भूमिका में निरंतर सुधार से मानव सभ्यता में प्रगति हुई है। यद्यपि भौतिक रूप से मानव कमजोर है, तथापि उसे श्रेष्ठ मानसिक गुणों का वरदान प्राप्त है। सभ्यता का प्रगति से मानव की भूमिका भौतिक श्रमकर्ता के स्थान पर मशीनों तथा ऊर्जा के स्वामी के रूप में परिवर्तीत हो गयी है। अपनी मानसिक शक्तियों के द्वारा वह नये-नये साधन तथा विधियाँ खोजता है तथा संस्कृति का निर्माण करता है। मानसिक श्रम के लिए मानव को भौतिक रूप से योग्य तथा स्वस्थ ही नहीं, अपितु समुचित रूप से शिक्षित एवं प्रशिक्षित भी होना आवश्यक है। इसीलिये संसाधनों के विकास की योजना तथा कार्यक्रम में सार्वजनिक स्वास्थ्य तथा शिक्षा का महत्व बढ़ गया है।

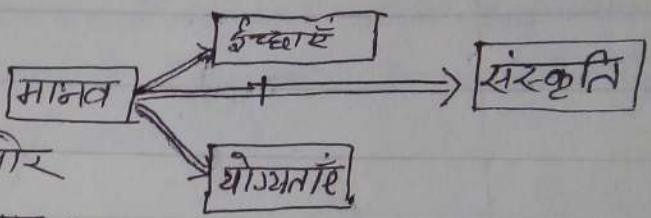

संसाधनों के विकास में एक उपभोक्ता के रूप में भी मानव की भूमिका उतनी ही महत्वपूर्ण है। वस्तुत मानवीय इच्छायें ही संसाधन निर्माण की प्रक्रिया को जन्म देती है। संसाधन मानवीय इच्छाओं की पूर्ती पूर्ति के लिए ही होते हैं। आधारभूत आवश्यकता का संबंध जीवन की भोजन, वस्त्र आवास की न्यूनतम आवश्यकता से है।